

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রীমতপরমহংসস্বামিব্রহ্মানন্দ রিরচিতম্
॥শ্রীহরিস্তোত্রম্ ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
॥ श्रीहरिसुत्रम् ॥

जगज्जालपालं कनकठमालं
शरच्चन्द्रभालं महादैत्यकालम् ।
नभोनीलकायं दुरारारमायं
सुपद्मासहायं भजेहं भजेहम् ॥ १ ॥

सदाश्लोधिवासं गलतपुष्पहासं
जगतसन्निवासं शतादित्यभासम् ।
गदाचक्रशस्त्रं लसतपीतरस्त्रं
हसच्छारुवक्त्रं भजेहं भजेहम् ॥ २ ॥

रमाकठहारं श्रुतिव्रातसारं
जलान्तुर्बिहारं धराभारहारम् ।
चिदानन्दरूपं मनोज्ञस्वरूपं
धृतानेकरूपं भजेहं भजेहम् ॥ ३ ॥

जर्राजन्महीनं परानन्दपीनं
समाधानलीनं सदैवानरीनम् ।
जगज्जन्महेतुं सुरानीककेतुं
त्रिलोकैकसेतुं भजेहं भजेहम् ॥ ४ ॥

कृतान्नायगानं खगाधीशयानं
विमुक्तेर्निदानं हरारातिमानम् ।
स्वभक्तानुकूलं जगदबुक्कमूलं
निरस्तातशूलं भजेहं भजेहम् ॥ ५ ॥

समस्तामरेशं द्विरेफाभकेशं
जगदविश्वलेशं हदाकाशदेशम् ।
सदा दिव्यादेहं विमुक्ताशिलेहं
सुबैकुण्ठगेहं भजेहं भजेहम् ॥ ६ ॥

সুরালীবলিষ্ঠং ত্রিলোকীবরিষ্ঠং
গুরুগাং গরিষ্ঠং স্বরূপৈকনিষ্ঠম্।
সদা যুদ্ধধীরং মহাবীরবীরং
মহাস্তোধিতীরং ভজেহং ভজেহম্ ॥ ৭ ॥

রমারামভাগং তলানগ্রনাগং
কৃতধীনযাগং গতরাগরাগম্।
মুনীন্দ্রেঃ সুগীতং সুরৈঃ সম্পরীতং
গুনৌঘৈরতীতং ভজেহং ভজেহম্ ॥ ৮ ॥

ইদং যস্তু নিত্যং সমাধায় চিন্তং
পঠেদষ্টকং কঠহারং মুরারেঃ।
স বিষ্ণেগর্ভিশোকং ধ্রুং যাতি লোকং
জরাজন্মশোকং পুনর্বিদতে নো ॥ ৯ ॥

॥ ইতি শ্রীহরিস্তোত্রং সংপূর্ণম্ ॥